ईसा मसीह

क्षमा से पुनरूत्थान तक

परम पूज्य श्री माताजी निर्मला देवी

सहज योग संस्थापिका एवं
कुण्डलिनी जागरण द्वारा आत्म–साक्षात्कार दात्री

हम हर जगह पढ़ते आये हैं कि ईश्वर एक ही है और एक वृक्ष के समान है। प्रत्येक धर्म उसका एक फल है और सभी अवतरणों का परस्पर सम्बन्ध है। अगर हमने यह तत्व समझ लिया तो हम अपने आपको हिन्दू, मुसलमान या ईसाई समझ कर आपस में लड़ने की भावना नहीं रखेंगे। इसके अलावा जो नासमझी मनुष्य सदियों से करता आया है वह है, जब-जब परमेश्वर ने अवतरण लिया या सन्त-महात्मा हुए तब-तब लोगों ने उन्हें कष्ट दिया है और उनके जाने के बाद उनके नाम पर धर्म बना दिए, बड़ी-बड़ी संस्थाएं बना दी और अपने आपको उनका सबसे बड़ा अनुयायी समझने लगे। चाहे वो संत तुकाराम हो या ज्ञानेश्वर महाराज या फिर गुरूनानक या पैगम्बर मोहम्मद।

अपने अहंभाव के कारण लोगों ने ईसा मसीह को तो सूली पर ही चढ़ा दिया, क्योंकि कोई मनुष्य परमेश्वर का अवतार बन कर आ सकता है ये उन की बुद्धि को मान्य नहीं था। ईसा मसीह ने ऐसा कौन सा अपराध किया था कि जिस से उनको सूली पर लटकाया गया? लोगों के लिए हमेशा अच्छाई करते हुए भी मनुष्य ने उन्हें दुःख दिया, परेशान किया। इतनी नासमझी कि जब उनसे पूछा गया कि 'एक चोर का छोड़ दिया जाए या ईसा मसीह को?',तो लोगों ने चोर को छोड़ने की बात की। इसके बदले उन्होंने उन लोगों के लिए क्या किया? परमात्मा से उनकी मूर्खता के लिए क्षमा मांगी।

क्रिसमिस के शुभ अवसर पर आइये हम भारतीय संस्कृति और बाइबल की कुछ समानताओं पर ध्यान दें। एक बड़ी दिलचस्प समानता ईसा मसीह और श्री गणेश के जन्म में है, श्री गणेश को माता पार्वती ने कौमार्य अवस्था में बिना अपने पति की सहायता से बनाया था। उसी प्रकार मदर मैरी ने भी बिना किसी पुरूष की सहायता से ईसा मसीह को अपने गर्भ में धारण किया था।

ईसा मसीह का जीवन

ईसा मसीह का महान जीवन हमें बहुत कुछ सिखाता है। उनका जन्म न किसी अमीर आदमी के घर हुआ और न ही किसी महल के आरामदायक बिस्तर पर बल्कि एक अस्तबल में जानवरों के बीच हुआ था। जन्म के बाद उन्हें एक ऐसे पालने में रखा गया जिसमें सूखी घास बिछी हुई थी। यह सब इस बात का प्रतीक है कि आध्यात्मिकता को भौतिकवाद, सुख-साधनों तथा दिखावे की आवश्यकता नहीं है। ऐसे व्यक्ति को धन-सम्पदा से कोई लगाव नहीं होता है, न वह इससे प्रभावित होता है। यह अन्तर्शक्ति है, अन्तर्ज्योति है जो हमारे व्यवहार में स्वयं अभिव्यक्त होती है।

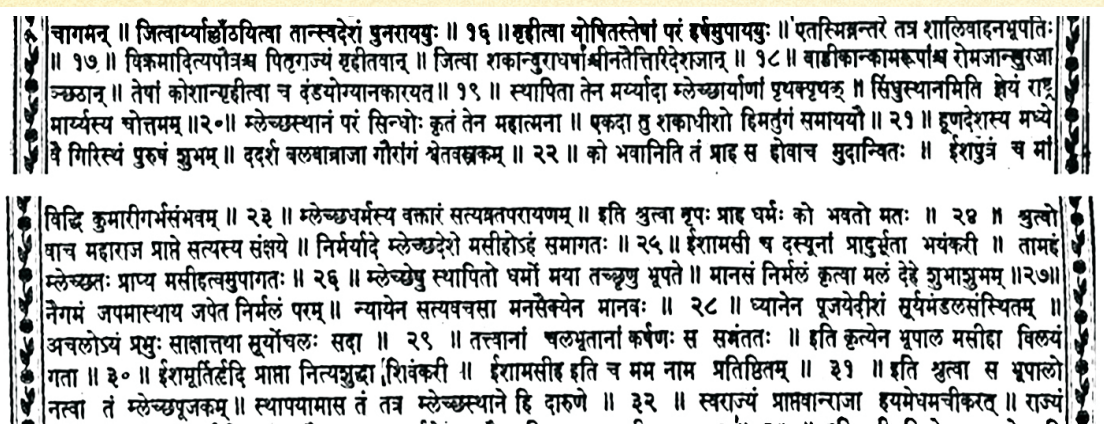

चागमन् ॥ जित्वार्य्याहोंठयित्वा तान्स्वदेशं पुनराययुः ॥ १६ ॥ गृहीत्वा योषितस्तेषां परं हर्षमुपाययुः ॥ एतस्मिन्नन्तरे तत्र शालिवाहनभूपतिः
॥ १७ ॥ विक्रमादित्यपौत्रश्च पितृराज्यं गृहीतवान् ॥ जित्वा शकान्दुराधर्षांश्चीनतैत्तिरिदेशजान् ॥ १८ ॥ बाह्लीकान्कामरूपांश्च रोमजान्खुरजा
न्छठान् ॥ तेषां कोशान्गृहीत्वा च दंडयोग्यानकारयत् ॥ १९ ॥ स्थापिता तेन मर्य्यादा म्लेच्छार्याणां पृथक्पृथक् ॥ सिंधुस्थानमिति ज्ञेयं राष्ट्र
मार्य्यस्य चोत्तमम् ॥२०॥ म्लेच्छस्थानं परं सिन्धोः कृतं तेन महात्मना ॥ एकदा तु शकाधीशो हिमतुंगं समाययौ ॥ २१ ॥ हूणदेशस्य मध्ये
वै गिरिस्थं पुरुषं शुभम् ॥ ददर्श बलवान्राजा गौरांगं श्वेतवस्त्रकम् ॥ २२ ॥ को भवानिति तं प्राह स होवाच मुदान्वितः ॥ ईशपुत्रं च मां
विद्धि कुमारीगर्भसंभवम् ॥ २३ ॥ म्लेच्छधर्मस्य वक्तारं सत्यव्रतपरायणम् ॥ इति श्रुत्वा नृपः प्राह धर्मः को भवतो मतः ॥ २४ ॥ श्रुत्वो
वाच महाराज प्राप्ते सत्यस्य संक्षये ॥ निर्मर्यादे म्लेच्छदेशे मसीहोऽहं समागतः ॥ २५ ॥ ईशामसी च दस्यूनां प्रादुर्भूता भयंकरी ॥ तामहं
म्लेच्छतः प्राप्य मसीहत्वमुपागतः ॥ २६ ॥ म्लेच्छेषु स्थापितो धर्मो मया तच्छृणु भूपते ॥ मानसं निर्मलं कृत्वा मलं देहे शुभाशुभम् ॥ २७ ॥
नैगमं जपमास्थाय जपेत निर्मलं परम् ॥ न्यायेन सत्यवचसा मनसैक्येन मानवः ॥ २८ ॥ ध्यानेन पूजयेदीशं सूर्यमंडलसंस्थितम् ॥
अचलोऽयं प्रभुः साक्षात्तथा सूर्योऽचलः सदा ॥ २९ ॥ तत्त्वानां चलभूतानां कर्षणः स समंततः ॥ इति कृत्येन भूपाल मसीहा विलयं
गता ॥ ३० ॥ ईशमूर्तिर्हृदि प्राप्ता नित्यशुद्धा शिवंकरी ॥ ईशामसीह इति च मम नाम प्रतिष्ठितम् ॥ ३१ ॥ इति श्रुत्वा स भूपालो
नत्वा तं म्लेच्छपूजकम् ॥ स्थापयामास तं तत्र म्लेच्छस्थाने हि दारुणे ॥ ३२ ॥ स्वराज्यं प्राप्तवान्राजा हयमेधमचीकरत् ॥ राज्यं

भविष्य पुराण के चतुर्भज खंड के 19 वें अध्याय के श्लोक 17-32

एक किताब "Jesus Lived in India (Holger Kersten)" में एक घटना का उल्लेख है जब वे अपनी युवा अवस्था में भारत आये और शालिवाहन राजा से मिले। जब राजा ने उनसे उनका नाम पूछा जो उन्होंने बताया, "मेरा नाम ईसा है और मैं मलेच्छों (मल की इच्छा करने वालों) के देश से आया हूँ। मुझे लगता है कि यही देश मेरा है।" लेकिन शालिवाहन राजा ने कहा कि तुम्हें वहीं जाकर अपने लोगों को बचाना चाहिए और उन्हें निर्मल तत्वम् प्रदान करना चाहिए। जब वे वापिस अपने देश गये, तो उन्हें साढ़े तीन साल में ही सूली पर लटका दिया गया।

वापिस जाकर ईसा मसीह ने लोगों को बहुत सी अच्छी बातें सिखाईं और बहुत से चमत्कार दिखाए। उन्होंने मृत व्यक्ति को जीवित किया, पानी पर चलकर दिखाया, 5000 लोगों को केवल पाँच रोटियों और दो मछलियों से भोजन कर के दिखाया, तब भी लोगों के दिमाग में नहीं आया कि वे परमेश्वर के पुत्र थे। मुश्किल से वे कुछ मछुआरों को ही इकट्ठा कर पाए, क्योंकि और कोई लोग उनके साथ आने के लिए तैयार नहीं थे। परन्तु उनके शिष्यों ने सोचा वे केवल बीमार लोगों को ठीक करते हैं। इसलिए वे बीमार लोगों को ही उनके पास ले जाते थे। जबकि उनके जीवन का असली लक्ष्य परमात्मा के साम्राज्य में जाने के लिए द्वार खोलना था और मानव जाति को अपने अहंकार से ऊपर उठाकर उसे आने वाले उद्धारक के उपदेशों को समझने के लिए तैयार करना था।

ईसा मसीह एक द्वार है–कौन सा द्वार?

So Jesus said to them again, "I tell you the solemn truth, I am the door for the sheep… I am the door. If anyone enters through me, he will be saved, and will come in and go out, and find pasture. (John 10:7-9)

उन्होंने बहुत ही स्पष्ट कहा कि अपनी स्वयं की इच्छा और पिता की आज्ञा से अपने प्राणों की बलि दे कर साधकों को बचाने आए हैं और उनको अपने आपको वापिस जीवित करने का भी अधिकार प्राप्त है। (John 10:15-18) आज्ञा चक्र, जिसके रक्षक ईसा मसीह हैं, अत्यन्त सूक्ष्म द्वार है जिसे पार करना आसान बनाने के लिए उन्होंने इस पृथ्वी पर अवतार लिया और अपना बलिदान करके उन्होंने स्वयं यह द्वार पहले पार किया। इसलिए उन्होंने कहा है कि 'मैं द्वार हूँ'।

अपने को सूली चढ़ाने वालों को भी क्षमा करके वे हमारे सामने एक महान उदाहरण प्रस्तुत कर गए। वस्तुतः क्षमा बहुत बड़ा आयुध है क्योंकि उससे मनुष्य अहंकार से बचता है। अगर हमें किसी ने दुःख दिया, परेशान किया या हमारा अपमान किया तो अपना मन बार बार यही बात सोचता रहता है और उद्विग्न रहता है। हम दूसरों के कारण होने वाली इन परेशानियों से उनको क्षमा करके बड़ी आसानी से छुटकारा पा सकते हैं।

आज्ञा चक्र का सूक्ष्म द्वार उनके द्वारा दी गई प्रार्थना 'दी लार्डस् प्रेअर' करने से खुलता है। मार्क 9:40 में लिखा है "जो मेरे विरोध में नहीं है, वो मेरे साथ हैं।" इसका अर्थ है कि हमें उनकी शिक्षाओं में विश्वास कर, उनका अपने जीवन में पालन करना होगा न कि हमें ईसाई धर्म अपनाना होगा। ये द्वार पार करने के बाद कुण्डलिनी शक्ति अपने मस्तिष्क में तालू (Limbic Area) में प्रवेश करती हे, उसी को परमात्मा का साम्राज्य कहते हैं। लेकिन यह बड़ी ध्यान देने योग्य बात है कि कहीं पर भी उन्होंने यह नहीं कहा कि वे हमारी मंजिल हैं।

फिर मंजिल क्या है? – पुनर्जन्म (Baptism)

Nicodemus said to Him, "How can a man be born when he is old? He cannot enter a second time into his mother's womb and be born, can he?"

Jesus answered, "Truly, I say to you, unless one is born of water and the Spirit he cannot enter into the kingdom of God. Whoever is born from human parents is a human; and whoever is born from the Holy Spirit is a spiritual being. (John 3:3-8)

उन्होने कहा था कि आपका दुबारा जन्म होना चाहिए अर्थात आपको द्विज होना पड़ेगा। संस्कृत में द्विज पक्षी को बोला जाता है, क्योंकि उसका दो बार जन्म होता है, एक बार अंडे के रूप में और दूसरी बार चूजे के रूप में। उसी प्रकार मनुष्य का पहला जन्म उसके माता-पिता द्वारा नश्वर शरीर के रूप में होता है और उसका दूसरा जन्म कुण्डलिनी जागृति से होता है। तत्पश्चात ही वह परमात्मा के साम्राज्य में प्रवेश का अधिकारी होता है।

वास्तव में बपतिस्मा देने का अर्थ है कुण्डलिनी शक्ति को जागृत करना और उसके बाद उसे सहस्रार तक लाना। इसलिए बपतिस्मा में पानी को तालू भाग पर डाला जाता है, क्योंकि कुण्डलिनी जब वहां पर आती है तो एक पानी के छोटे से फव्वारे की अनुभूति देती है, संयोग से इस भाग को अंग्रेजी में Fontanelle Bone भी कहा जाता है, जिसका ग्रीक भाषा में अर्थ पानी का फव्वारा ही होता है।

एल ग्रेको द्वारा पेंटेकॉस्ट पेंटिंग
(प्राडो संग्रहालय)

लोगों ने इसका ये अर्थ लगाया कि जब परमात्मा का अवतरण होगा और तब वे पानी की जगह आग से बपतिस्मा देंगे। वस्तुतः इसका सही मतलब ये है कि एक ऐसा अवतरण होगा जो कुण्डलिनी शक्ति जागृत करने में सक्षम होगा। कुण्डलिनी शक्ति जब जागृत होती है तो वह हमारे सहस्रार चक्र का भेदन करते हुए बाहर आती है जिसे बाइबल में Tongues of Flame कहा गया है, और जो बहुत से चित्रकारों ने दिखाया भी है।

ईसा मसीह ने बड़े ही गूढ़ तरीके से कुण्डलिनी के बारे मे बताया है, उन्होने उसे कहीं पर एक सांप कहा, कहीं अग्नि की ज्वाला कहा या फिर कहीं Holy Spirit अर्थात एक पवित्र आत्मा कहा है।

ईसा मसीह और धर्म गुरू

वर्तमान समय में कुण्डलिनी जागृत करने के लिए अनेक धर्म गुरू हर जगह फैले हुए हैं। लेकिन ये धर्म गुरू कुछ लाभ करने के बजाय साधक को नुकसान ही पंहुचाते हैं। ईसा मसीह ने हमें पादरियों, पंडितों, मौलवियों या हर धर्म के गलत धर्म गुरूओं के बारे में पहले ही चेतावनी दे दी थी-

Beware of false prophets, which come to you in sheep's clothing, but inwardly they are ravening wolves. (Matthew 7:15/24:24/John 4:1/10:10-13)

उन्होंने उन्हें चोर और डाकू बताया जो अपने आध्यत्मिक शब्दों के माध्यम से भोले साधकों को झूठे चमत्कार दिखा कर, उन्हें आध्यत्मिकता के बारे में गलत बातें सीखा कर, गुमराह करके उनकी कुण्डलिनी को क्षति पहुंचा देते हैं और उसकी जागृति में बाधक बनते हैं। ऐसे लोगों को ईश्वर से कोई भी अधिकार प्राप्त नहीं होता है और जो किसी नौकर की भांति होते हैं। जो केवल पैसे के लिए कार्य करता है और जैसे ही साधक पर कोई मुसीबत आती है वो उसे छोड़ कर भाग जाते हैं। अतः हमें ऐसे बहरूपियों से बचना चाहिए।

इस मंजिल को कैसे प्राप्त किया जा सकता है?

But the Comforter, which is the Holy Spirit, whom the Father will send in my name, he shall teach you all things, and bring all things to your remembrance, whatsoever I have said unto you. (John 14:26/15:26)

बाइबल में मैथ्यू (28:19) में उन्होने पिता, पुत्र और जिस Holy Spirit या पवित्र आत्मा की बात की है, वह एक नारी शक्ति ही हो सकती है, न कि पुरूष। कुण्डलिनी शक्ति ही Holy Spirit हैं और उसको जो जागृत कर सके ऐसी शक्ति को ही Comforter कहा गया है, जिसे परमपिता ईसा मसीह के बाद भेजेंगे। उन्होंने कहा कि वह पवित्र आत्मा हमें सत्य का रास्ता दिखाएंगी, सभी धर्मो को एक करेंगी, सभी धर्मो के प्रणेताओं ईसा मसीह, गुरूनानक, पैगम्बर मुहम्मद द्वारा कही हुई बातों को सत्य साबित करेंगी और हम सबको ईसा मसीह की तरह पुनरूत्थान (Resurrection) प्रदान करेंगी अर्थात आत्म-साक्षात्कार प्रदान करेंगी।

सहज योग के माध्यम से श्रीमाताजी निर्मला देवी ने यह कार्य बड़ी ही सुगमता से सफल बनाया है। सहज में ही हमारी कुण्डलिनी शक्ति का जागरण कर हमें चारों और फैली परमात्मा की शक्ति से योग कराया है। हमारी उत्क्रांति और आध्यमिक उन्नति के लिए, हमारी रीढ़ की हड्डी में सात चक्र और कुण्डलिनी शक्ति स्थित है। ये सभी चक्र हमारे शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक कल्याण के लिए उत्तरदायी हैं। जब कुंडलिनी जागृत होती है, तो वह चक्रों को पोषित करती है और उन्हें संघटित करती हुई हमें परमात्मा के दिव्य प्रेम की सर्वव्यापी शक्ति से जोड़ देती हैं। इस को बाइबल में 'Cool Breeze of the Holy Ghost', कुरान में 'रूह' और भारतीय ग्रंथों में 'परमचैतन्य' कहा जाता है पातंजलि ने इस 'ऋतंभरा प्रज्ञा' कहा है। कुंडलिनी जागरण ओर चक्रों के पोषण का एक महत्वपूर्ण लाभ यह होगा कि व्यक्ति में एक आंतरिक संतुलन आएगा और वह स्वस्थ हो जाएगा।

मानव का सूक्ष्म तंत्र

अब पुनरूत्थान का समय आ गया है, जिसके लिए ईसा मसीह ने अपना बलिदान दिया था। जब तक कुण्डलिनी शक्ति आज्ञा चक्र को पार नहीं कर जाती तब तक निर्विचार स्थिति प्राप्त नहीं होती। साधक में निर्विचारिता प्राप्त होना, साधना की पहली सीढ़ी है। जिस समय कुण्डलिनी शक्ति आज्ञा चक्र को पार करती है, उस समय निर्विचारिता स्थापित होती हे, तब हम अंदर से एकदम शांत हो जाते हैं। जिस व्यक्ति ने यह शांति प्राप्त कर ली, वह शांति को प्रसारित करने लगता है और अपने चारों ओर एक शांतिपूर्ण वातावरण निर्मित करता है।

ईसा मसीह ने सारी मनुष्य जाति के कल्याणार्थ व उद्धारार्थ जन्म लिया था। वे किसी जाति या समुदाय की निजी सम्पदा नहीं हैं। परन्तु उनका शरीर आत्म तत्व से बना था इसलिए मृत्यु के बाद उनका पुनरूत्थान हुआ और उस पुनरूत्थान के बाद ही उनके शिष्यों ने जाना कि वे साक्षात् परमेश्वर थे। यदि लोग उनके उस स्वरूप को, अवतरण को पहचान कर अपनी आत्मोन्नति करें तो चारों तरफ आनन्द ही आनन्द होगा।

आईये नव वर्ष में ऑनलाईन कार्यक्रम द्वारा आत्मसाक्षात्कार का अनुभव प्राप्त करें

सहज योग अंतर्राष्ट्रीय विश्व निर्मल धर्म

रविवार, 24 जनवरी 2021
हिन्दी भाषा सत्र प्रातः 10 बजे से 11 बजे तक
अंग्रेजी सत्र दोपहर 12 बजे से 1 बजे तक

अनुवर्ती कार्यक्रमः मंगलवार, 26 जनवरी 2021
हिन्दी भाषा सत्र दोपहर 2 बजे से 3 बजे तक
अंग्रेजी भाषा सत्र सांय 4 बजे से 5 बजे तक

अन्तर्राष्ट्रीय सहज योग स्वर्ण जयंती वर्ष · स्वर्ण जयंती १९७० - २०२० आध्यात्मिक उत्थान के 50 वर्ष · परम पूज्य श्री माताजी निर्मला देवी

सीधे प्रसारण के लिए जुड़ेः http://youtube.com/c/nirmaldhamlive | +91 9310177207

सहज दर्शन प्रचार और प्रसार समितिः sahajayoga.org.in | nirmaldham.org | Toll Free 1800-2-700-800 | Jhansi-98891 58145 | Dehradun-94120 47547